चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय
विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याएँ : तुलनात्मक अनुशीलन।

विषय-प्रवेश :

संसार के हर क्षेत्र में कोई-न-कोई समस्या विद्यमान है। मानव-जीवन और समस्या का नाता सदा ही अभिन्न रहा हैं। समस्या रहित जीवन की कल्पना नहीं की जाती है। समस्या तो हर स्थिति में विद्यमान रहती हैं। जब परपस्पर विरोधी स्थितियों का निर्माण होता हैं तब उन विरोधी स्थितियों में संघर्ष निर्माण होता हैं और इसी संघर्ष से समस्या का उद्भव होता हैं। चेतना का विकास और समस्या का आभास के संदर्भ में हेगेल का कहना है कि, - ''विशुध्द अन्धकार तथा विशुध्द रोशनी दोनों के संयोग में यानी एक वस्तु को उसके विपरीत से मिला देने पर तीसरी चीज की व्युत्पति होती हैं और वह तीसरी हमारे लिए ऐसी रोशनी बनती हैं जिसमें हम देख सकते हैं। इसी से हेगेल का कहना है कि विरोध के अभाव में कोई चीज उत्पन्न नहीं होती''[1]

इससे स्पष्ट है कि समस्या की अनुभूति हमें चेतना के स्तर पर ही होती हैं। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि तीसरी वह कौनसी चीज है जो दो विरोधी स्वभाव की शक्तियों के मेल से उत्पन्न होती हैं और जिसके प्रकाश में हम वस्तुस्थिति को देख सकते हैं। इसका उत्तर हैं - चेतना का उद्भव। जब एक बार चेतना एवं विवेक शक्ति जागृत हो जाती हैं, तो समाज में व्याप्त विषमताएँ, विसंगतियाँ, विडंबनाएँ और परस्पर विरोधी भास, उस चेतना के प्रकाश में, स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। तब हमारे विचार एवं मान्यताओं पर जबर्दस्त प्रहार होता हैं। फलत: समस्याएँ उद्भूत होकर तीव्रतर हो जाती हैं।

आधुनिक युग में समस्यारहित जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। मनुष्य अपनी जितनी उन्नति करना चाहता है, उतनी ही उसके जीवन में समस्याएँ बढ़ती ही जाती हैं। सही मायने में समस्या जीवंतता का प्रतीक है और फिर जिस संस्कृति में स्त्री-पुरुष समानता ना हो वहाँ समस्या का रुप अधिक जटिल बन जाता है। भारतीय संस्कृति पुरुषप्रधान होने के कारण नारी जीवन समस्याओं से भरा हुआ दिखाई देता हैं। उसे ही हर समस्या का सामना करना पड़ता है। पद्माशा तथा सानिया

1. मन्भथनाथ - राजोंद्रनाथ शर्मा 'ऐतिहासिक भौतिकवादी' - पृ. - 134

की कहानियों में नारी को जीवन में किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है यह दर्शाया हैं। वे इस प्रकार हैं -

4.1 विवाह-विच्छेद समस्या :

विवाह, समाज की एक अनिवार्यता है, किंतु विषम परिस्थितियों ने इस अनिवार्यता को भी एक समस्या का रुप दे दिया हैं। विवाह प्रथा संसार के सभी देशों में प्रचलित हैं। संसार में अनैतिकता को रोकने का एक मात्र उपाय विवाह ही है, लेकिन वैवाहिक असंगतियों के कारण विवाह-विच्छेद की समस्या बहुत गंभीर बन चुकी है। मत भिन्नता, रुचियों में भिन्नता, काम असंतुष्टि, प्रेमाभाव, वैवाहिक संबंधों में उदासिनता, असामंजस्य आदि कई कारण वैवाहिक जीवन में अस्थिरता उत्पन्न कर देते हैं। इस संबंध में डॉ. साधना शाह का कथन है, ''प्यार की परिणति विवाह में न होना जितना स्वाभाविक है, उतना ही स्वाभाविक है, अनबन की परिणति विवाह-विच्छेद।''[1]

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में भी विवाह-विच्छेद की सनस्या दिखाई देती है। पद्माशा की 'बर्फ' कहानी की दीपा और देवेन का प्रेमविवाह हुआ है। उनको एक नन्हा बेटा भी है। लेकिन देवेन को शादी के बंधन से मुक्ति चाहिए। इसीलिए वह उसे छोड़कर दिल्ली चला जाता हैं और दीपा अकेली बाबुल को संभालती देवेन के लौटने की राह देखती है। इस तरह दीपा को विवाह-विच्छेद समस्या का सामना करना पड़ता है।

'उदास गझल सी एक शाम' की रानी वीरेश के साथ प्यार करती थी लेकिन वीरेश उसे धोखा देता है और दुसरी लड़की से शादी करता है। यह सदमा रानी नहीं सह पाती, लेकिन वीरेश के शादी के बाद रानी भी शादी करती है। लेकिन वह पति को अपना नहीं सकती। वह शादी की पहली रात उसे धकेल देती है, इसी कारण उसे विवाह विच्छेद समस्या का सामना करना पड़ता है। इस के बाद वह फिर दुसरी शादी करती है। लेकिन उसे भी वह निभा नहीं पाती। फिर उसे विवाह-विच्छेद समस्या का सामना करना पड़ता है।

'खानाबदोश रिश्तें' की सुजाता एक जानी-मानी पत्रकार थी। वह शादी नहीं करना चाहती थी, फिर भी जब भुवन उसके जिंदगी में आता है तो वह प्यार में अंधी होकर उसे उसके पहली पत्नी के बच्चों सहित बिना सोचे समझे अपनाती हैं। नई नवेली के नए दिन खत्म होने के बाद उसे एहसास

1. डॉ. साधना शाह, नई कहानी में आधुनिकता बोध, पृ. - 82

होता है कि वह जिस भुवन को चाहती थी वह उसका बाहर का रुप था और अंदर वह कुछ अलग ही था । वह उसे सात साल निभा भी लेती है, लेकिन उसके बाद वह फिर अपना छोड़ा हुआ कैरियर संभालने का प्रयास करती है। इस तरह सुजाता को विवाह विच्छेद समस्या का सामना करना पड़ता है।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता ने अपने ही सहपाठी विनय के साथ घरवालों के इच्छा के विरोध में शादी करती है। बाद में वह उच्चपद पर नौकरी करती है और विनय भी लेक्चरर बन जाता हैं । ''लेकिन फूलों और सपनों का मौसम इतना क्षणिक होगा, यह कहां सोच सकी थी वह।''[1] विनय और उसके माता-पिता की यह शादी घाटे का सौदा लगता है। दुसरी जगह विनय शादी करता तो उसे बहुत सारा सामान तिलक में मिल जाता इसी सोच में वह सुस्मिता को सताते है। इसे वह सह नहीं पाती और फिर उसे विवाह-विच्छेद समस्या का सामना करना पड़ता हैं।

'गर्म-बिस्तर' की नीमा परेश की पत्नी है। परेश लोहे के कारखाने में काम करता है। उसे एक बेटी भी है। नीमा और परेश के आपसी संबंध बिलकुल अच्छे नहीं है। रोज शराब पीकर परेश उसे मारता-पीटता है, गालियाँ देता है। तभी भी सिर्फ बच्ची के कारण नीमा सब सह लेती है। लेकिन जब परेश दुसरी औरत घर ले आता है तब वह उससे झगड़ा करती है। फिर भी परेश उसे ही मारकर घर से बाहर निकाल देता है और फिर नीमा उसे छोड़कर चली जाती है। इसतरह यहाँ विवाह-विच्छेद समस्या दिखाई देती है।

सानिया की कहानियों में भी नारी विवाह-विच्छेद समस्या का सामना करती दिखाई देती है। उनकी 'परिमाण' की देवकी की शादी सुखदेव के साथ हुई थी। लेकिन देवकी बचपन से ही कैलास को चाहती थी। कैलास घर से फिल्मों में काम करने के लिए भाग गया था इसी कारण कैलास को देवकी कभी बता नहीं पाती और फिर उसकी शादी सुखदेव से होती है। बाद में देवकी और कैलास के संबंध दृढ बनते जाते है। सुखदेव को शक होने लगता है कि रितू उसकी बेटी वह कैलास की ही बेटी हें। इसकारण दोनों में बार-बार झगड़े होते है इन दोनों के विवाह का विच्छेद हो जाता है । यहाँ विवाह-विच्छेद समस्या दिखाई देती है।

'काजवे' की अनू का हेमंत के साथ प्रेमविवाह हुआ था। हेमंत का अनू के साथ व्यवहार अच्छा था लेकिन वह खुद की जिंदगी में अपने नीतिमुल्यों को भूल चुका था । वह ऑफिस में लोगों

---

1. डॉ. पद्माशा झा, छोटे शहक की शकुन्तला पृ. - 66

से पैसे लिए बगैर कोई भी काम नहीं होने देता था और फिर अनू को विवाह-विच्छेद समस्या का सामना करना पड़ता है। वह उससे झगड़ा कर वापस मायके अपनी बच्ची के साथ आती है। यहाँ अनू के जीवन में विवाह विच्छेद समस्या दिखाई देती है।

'चित्र' कहानी की शशी एक कर्तबगार, महत्वाकांक्षी कामकाजी नारी है। एस्बी नामक आदमी के कंपनी में वह सेक्रेटरी थी लेकिन उसकी होशियारी देखकर उन्होने उसे अपनी बहू बनाया। शशी का पति विनोद की उसके पिता से कभी बनती न थी। इसी कारण उसने अपना अलग कारोबार शुरु किया लेकिन वह शशी से आगे कभी नहीं जा सका। इससे वह उसे निचा दिखाने हेतु एक औरत को लेके उस से अलग रहने लगा। शशी फिर भी अपना कारोबार चलाती रही, बिना किसी तक्रार के। लेकिन उसे अपनी महत्वाकांक्षा और कैरियर के कारण वैवाहिक जीवन में विवाह-विच्छेद समस्या को सहती दिखाई देती है।

'चित्र' कहानी में शशी के ससुर एक महत्वाकांक्षी आदमी था। उसने बहुत लोगों को धमकाकर जो चाहा वह पाया था और अपनी एक अलग पहचान बनायी थी। वह वैसे बाहर थे जैसे ही अपनी पत्नीं के लिए भी थे। शशी को लगता है कि - "एस्बींनी स्वत:च्या महत्त्वकांक्षेत माणसं आणि मनं चिरडली त्यात वेणूताईचंही एक होतं "[1] (एस्बींजीने खुद की महत्त्वाकांक्षा के कारण लोग और उनके मन को भी कुचल डाला उसमें वेणूताई भी एक थी।") एस्बीं के विक्षिप्त स्वभाव के कारण वेणूताई उनसे अलग रहने लगती है। यहाँ विवाह-विच्छेद समस्या दिखाई देती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया दोनों कहानीकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात नारी जीवन में विवाह-विच्छेद समस्या दृष्टिगोचर होती है।

दोनों की कहानियों में नारी ही विवाह विच्छेद की समस्या का सामना करती दिखाई देती है। दोनों की कहानियों में नारी को विवाह विच्छेद के कारण अकेलेपन जैसी समस्या का सामना करना पड़ता चित्रित होता है। दोनों की कहानियों में स्वावलंबी नारी दिखाई देती है। पद्माशा की कहानियों में नारी विवाह-विच्छेद के बाद किसी का सहारा लेती दिखाई देती है। सानिया की कहानियों में ऐसे नहीं दिखाई देता।

---

1. सानिया, चित्र, पृ. -122

विवेच्य काहनीकारों के कहानियों में विवाह-विच्छेद समस्या के अध्ययन के पश्चात जो साम्य-वैषम्य दिखाई देता है, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियें में विवाह-विच्छेद समस्या दृष्टिगोचर होती है।
2. दोनों की कहानियों में विवाह विच्छेद समस्या के कारण नारी को अकेलेपन का शिकार होना पड़ता है।
3. दोनों की कहानियों में विवाह विच्छेद के बाद भी नारी स्वालंबबी दिखाई देती है।

वैषम्य :

1. पद्माशा के कहानियों की नारी विवाह-विच्छेद के बाद किसी गैर आदमी का सहारा लेती दिखाई देती है।

- सानिया की कहानियों में ऐसा चित्रण दिखाई नहीं देता।

4.2 अकेलेपन की समस्या :

मनुष्य समाज में इसीलिए रहता है कि, उसे अकेलापन पसंद नहीं। अकेलेपन से वह घबराता है। परंतु फिर भी दुनिया में जाने ऐसे कितने लोग है जिन्हें अकेलापन खाए जा रहा है और उनके पास अपना कोई नहीं है। स्त्री-पुरुष की तुलना में स्त्री को ही ज्यादा अकेलापन सहना पड़ता है । हमेशा वह दुसरों के बारें में सोचती रहती हैं और उसके बारे में कोई सोचता नहीं है। परिवार को संभालने की जिम्मेदारी जितनी पुरुष की होती हैं उतनी ही स्त्री की भी। लेकिन होता यह है कि, सिर्फ मात्र आर्थिक जिम्मेदारी पति संभालता है और बाकि स्त्री को ही संभालना पड़ता है। इसम में अगर उसे प्यार, अपनापन ना मिले तो वह अकेलेपन की समस्या का शिकार होती नजर आती है। पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में भी अकेलेपन की समस्या चित्रित है।

पद्माशा की 'बर्फ' कहानी की दीपा का पति देवेन शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने हेतु उसे और बच्चे को छोड़कर चला जाता है तब दीपा अकेली पड़ जाती है। तभी उसके जीवन में कुणाल आता है। उसको अकेलेपन के कारण वह कुणाल से ज्यादा ही अपेक्षाएँ रखने लगती है। एक बार जब वह कुणाल के साथ शहर जाती है तब कुणाल को अपने कामों में उसे देखने को पुरसत नहीं

मिलती। तथा दीपा बहुत अकेली पड़ जाती है और फिर आधी रात को ट्रेन से वापस अकेली लौटती है। यहाँ दीपा द्वारा अकेलेपन की समस्या दिखाई देती है।

'चांद पीला क्यों है ?' की मोहिनी की शादी जी. जे. से होती है। जी. जे. दिखने में बहुत सुंदर है और फिर भी वह मोहिनी जैसी सांवली लड़की के साथ शादी करता है। मोहिनी को आश्चर्य लगता है और वह उसे इस बारे में पुछती है । तो जी. जे. उसे कहता है कि, -"मैं अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए कमाऊ बीबी चाहता और तुम जानती हो, हमारी जाति में एम.ए. पास कोई कुँआरी लड़की मिलती कहाँ हैं ?"[1] यह सुनकर मोहिनी को अकेलेपन का सामना करना पड़ता है। उपर से उसे शक है कि, जी. जे. का शालीनी नाम के औरत के साथ कुछ चक्कर है । यह सोच-सोचकर वह अकेलेपन की शिकार होती दिखाई देती है। इस प्रकार यहाँ अकेलापन की समस्या चित्रित हुई हैं।

'पीली कली गुलाब की' कहानी की मालिनी के पति को दूतावास में एक उच्च अधिकारी होकर विदेश जाना पड़ता है। मालिनी का बड़ा बेटा पहले से ही होस्टल में रहता था और फिर बाद में जब विवेक छोटे बेटे राहुल को भी होस्टल भेजने के लिए कहता है तब मालिनी एकदम अकेली हो जाती है। उसे लगता है कि - "एक विवेक ही तो गये थे विदेश- लेकिन लगता था जैसे पूरा समाज चला गया हैं। आखिर स्त्री-पुरुष पर इस तरह क्यों आश्रित हो जाती है की पुरुष के बिना उसका सारा अस्तित्व भड़भड़ाकर गिरने लगता हैं।"[2] इसतरह मालिनी परिवार साथ ना होने के कारण अकेलेपन की शिकार हो जाती है।

"उदास गजल सी एक शाम" की रानी वीरेश नाम के लड़के से प्यार करती थी। वह दोनों भागकर शादी भी करनेवाले थे। लेकिन ऐन वक्त पर वीरेश नहीं आता और यह सदमा रानी सह नहीं पाती। वह एकदम अकेली हो जाती है बाद में लेक्चरर बनती हैं और वीरेश की शादी होने के बाद वह भी शादी करती है। लेकिन वह इस शादी को निभा नहीं पाती। फिर दुसरी शादी करती है वह भी निभा नहीं सकती। यहाँ रानी विश्वासघात के कारण अकेलेपन की समस्या से झुरती है ।

'गर्म बिस्तर' की नीमा का पति परेश शराबी आदमी था और वह हमेशा उसे मारता-पीटता था। एक बार तो वह दूसरी औरत को घर में रखता है । इसी कारण नीमा और परेश में झगड़ा होता हैं लेकिन परेश नीमा को ही घरसें निकाल देता है। फिर नीमा एक पंडित के घर में पनाह लेती है और

---

1. डॉ. पद्माशा झा, चांद पीला क्यों हैं ? पृ. -26

2. डॉ. पद्माशा, पीली कली गुलाब की, पृ. - 38

उन्हीं की होकर रहती है । पंडित जी के घर नें उसे किसी भी बात की कमी नहीं थी फिर भी वह अकेलेपन की समस्या से पीड़ित थी क्योंकि उसकी बच्ची उसके झगड़े में वहीं परेश के पास थी। उसकी याद के कारण सुख सुविधा के बावजूद भी माँ का दिल बच्ची के बिना अकेला था। यहाँ नीमा द्वारा अकेलेपन की समस्या का चित्रण हुआ हैं।

सानिया के 'परिमाण' की देवकी कैलास से प्यार करती थी। लेकिन कैलास फिल्मों में काम करने के हेतु घर से भाग जाता है और देवकी की शादी सुखदेव से होती हैं। देवकी बड़ी तन्मयता से सभी का खयाल रखती है। सुखदेव को भी प्यार करती है। फिर भी वह खुद के मन के अकेलेपन को मिटा नहीं पाती। एक बार प्यार ना मिलने के कारण वह अनेकों के साथ अपना संबंध बनाती हैं। फिर भी अकेलेपन की समस्या को वह मिटा नहीं पाती। देवकी यहाँ अकेलेपन की समस्या से तड़फती दिखाई देती है।

'स्पर्श' की सुचित्रा एक घरेलू औरत है । पति और बच्चों में ही उसका सारा सुख है । वह जो पति चाहे वही हमेशा करती है और बच्चे भी हर काम के लिए माँ पर ही निर्भर रहते है । सुचित्रा ने सभी इच्छानुसार परिवार के हित के लिए ही अपने जीवन को ढ़ाल दिया है। लेकिन जब सुचित्रा का पति सुरेंद्र को अस्पताल में ऑपरेशन के लिए अॅडमिट किया जाता है। तब सुचित्रा के बेटे के उम्र का डॉक्टर विक्रम का स्वभाव सुचित्रा को बहुत भाँता है। वह बहुत ही हसमुख और बहुत अपने पन से बात करता है । वह एक बार उसे वह बहुत सुंदर दिख रही है इस साड़ी में ऐसे कहता हैं। तब सुचा का ध्यान खुद पर जाता है और वह सोचती रहती है कि, - "किती वर्ष गप्प बसत आलो आपण ? वर्षानुवर्ष ? दिवसे दिवस ? नवरा म्हणून ? मुलं म्हणून। याला काही अंतच नाही"[1] (कितने साल चुप रहती आयी थी ? सालो साल ? दिनो दिन ? पति के कारण ? बच्चों के कारण ? इसे कुछ अंत ही नहीं) वह अकेले सभी के सुविधानुसार करती आयी है । सबको जो अच्छा लगता है वही करते हुए। लेकिन किसी ने उसके बारे में नहीं सोचा है । कभी वो भी सुंदर दिखती है , उसे भी बाहर जाने का मन करता है। इस एहसास से वह अकेलेपन की समस्या से गुजरती चित्रित होती है ।

'एक पाऊल पुढे !' की ऊर्मिला एक आर्किटेक्ट थी। वह विश्वास के फर्म को सँभालती है और बाद में उसकी पत्नी बनकर घर को सँभालने लगती है उसका परिवार सीमित है। एक ही बेटा है आलोक, वह जैसे बड़ा हुआ वैसे ऊर्मिला बहुत ही अकेली हो जाती हैं। एक आर्किटेक्चर का

---

1. सानिया, स्पर्श, पृ. - 36

दिमाग लेकिन वह घर में बैठे-बैठे कुछ नहीं कर पाती। इसी कारण वह अकेलेपण की समस्या को झेलती दिखाई देती हैं।

'काजवे' कहानी की अनू के बचपन के दोस्त राघव की पत्नी लीला एकदम सीधी-साधी लड़की थी। माता-पिता ने आर्थिक दुर्बलता के कारण उसका विवाह उससे उम्र में कई ज्यादा राघव के साथ किया था। राघव विक्षिप्त स्वभाव का आदमी था। वह उससे कभी झगड़ा नहीं करता था और ना हीं कभी उससे बात करता है। इसी कारण वह बहुत अकेली पड़ती है। इससे छुटकारा पाने हेतु वह बच्चा चाहती है लेकिन उसके लिए भी राघव उसके पास तक नहीं जाता। इसी अकेलेपन की समस्या से लीला घुटन के कारण अकेलेपन की समस्या से झुँझलाती दिखाई देती हैं।

'चित्र' की शशी एक कर्तबगार और महत्वाकांक्षी नारी थी। उसने अपने ससुर द्वारा दी गई जिम्मेदारी को निभाते हुए उनका कारोबार बहुत अच्छा संभाला था। लेकिन वह काम करते-करते पारिवारिक जिम्मेदारियों को भूल जाती है। बच्चों की तरफ ध्यान ना देने के कारण वह बिखर जाते है और अपने मन कहें वहीं करते हैं। पति उसे निचा दिखाने के लिए दुसरी औरत के साथ अलग रहता है। इससे सभी सुख सुविधा पाकर भी अपनापन ना होने के कारण वह अकेलेपन की समस्या से पीड़ित द्रष्टव्य होती हैं।

'आकार' कहानी की सुचेता का पति रवि पैसे कमाने के लिए विदेश चला जाता है। रवि एक ऐय्याशी आदमी है। विदेश में सिर्फ शौक के लिए पत्नी को अकेला छोड़कर चला जाता है। सुचेता भोली-भाली लड़की थी जो उसके प्यार में अंधी होकर उससे प्रेमविवाह कर बैठी थी। रवि बहुत पैसा कमाऐगा और उसे भी विदेश ले जायेगा ऐसे झुठे सपनों के सहारे वह अपनी अकेलेपन कि समस्या से छुटकारा पाना चाहती है। देवर और ननद के बच्चों को सँभालती, घर का सारा काम करके और फिर ऑफिस में भी काम करती थी। फिर भी वह अकेलेपन से छुटकारा नहीं पा सकती थी। इसतरह सुचेता की व्यथा द्वारा अकेलेपन की समस्या परिलक्षित होती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया के कहानियों के अध्ययन के पश्चात दोनों की कहानियों में अकेलेपन की समस्या दिखाई देती है। दोनों की कहानियों में स्वावलंबी नारी और परावलंबी नारी दोनों भी अकेलेपन की समस्याँ से झुँझलाती दिखाई देती हैं। दोनों की कहानियों में अपनापन न मिलने के कारण नारी अकेलेपन की शिकार होती चित्रित हुई हैं। कहानियों में नारियँ पति के विक्षिप्त स्वभाव

के कारण अकेलापन सहती दिखाई देती है । दोनों की कहानियों में नारी बच्चों की सुविधा के कारण अकेलेपन की समस्या को झेलती दिखाई देती है। पद्माशा की कहानियों की नारी बच्चों के साथ नहीं रह सकती इसलिए अकेलेपन की समस्या का सामना करती है। सानिया की कहानियों की नारी बच्चें उसके साथ नहीं रहना चाहते इसलिए अकेलेपन की सनस्या का सामना करती दिखाई देती है।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियें में अकेलेपन की समस्या को लेकर जों साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में अकेलेपन की समस्या का चित्रण दिखाई देता हैं।
2. दोनों की कहानियों में स्वालंबी और परावलंबी दोनों भी नारियाँ अकेलेपन की समस्याँ से झुँझलती दिखाई देती है।
3. दोनों की कहानियों में अपनापन ना मिलने के कारण अकेलापन सहनेवाली नारी चित्रित हुई है।
4. दोनों की कहानियों की नारियाँ पति के विक्षिप्त स्वभाव के कारण अकेलेपन की समस्या की शिकार होती परिलक्षित होती हैं।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की नारी बच्चों के साथ नहीं रह सकती इसीलिए अकेलापन सहती चित्रित होती हैं।

- सानिया की कहानियों की नारी बच्चें साथ नहीं रहते इसीलिए अकेलेपन को सहती चित्रित होती है।

4.3 प्रेमविवाह एक समस्या :

विवाह में प्रेम तत्त्व मुख्य होता हैं। 'स्त्री-पुरुष का आकर्षण एक प्राकृतिक सत्य है। इसी आकर्षण पर सृष्टि के विकास संबंधों में प्रेमतत्वों को अनिवार्य माना गया है।''[1]

एक दुसरे के प्रति यह आकर्षण जात-पात, ऊँच-नीच, समाज का विरोध सब दीवारों को लांघ कर विवाह के पवित्र बंधन में बाँध देता हैं। प्रेम-विवाह अधिकांशत: असफल होते है, ऐसी

1. डॉ. बिन्दु अग्रवाल, हिंदी उपन्यासों में नारी-चित्रण, पृ. -327

लोगों की सामान्यत: मान्यता होती हैं। किन्तु प्रेमविवाह में भी परंपरागत या घरवालों द्वारा तय किए गए विवाह की तरह सफलता तथा असफलता दिखाई देती है। प्रेमविवाह असफल होते हैं यह बात अधिक मात्रा में सुनी सुनाई होती हैं। सच बात तो यह है कि विवाह, विवाह होता हैं और समझदारी के अभाव में कोई भी विवाह असफल हो सकता है , केवल प्रेमविवाह नहीं।

पद्माशा की 'बर्फ' की दीपा देवेन के साथ सब के विरोध के बावजूद प्रेमविवाह करती है। लेकिन एक बच्चा होने के बाद देवेन को शादी जैसे बंधन से मुक्ति चाहिए थी इसीलिए वह दीपा और बच्चें को छोड़कर दिल्ली चला जाता है । दीपा के पुछने पर कहता है कि, ''मैरेज-लाइफ मुझे सुट नहीं करती। आइ वांट टु बी फ्री फ्रोम ऑल बरडंस (मैं सभी बन्धनों से मुक्ति चाहता हूं) ।''[1] दीपा देवेन के जाने के बाद अकेली हो जाती है। उसका प्रेमविवाह ही उसके लिए एक समस्या बनी दिखाई देती है ।

'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता शुक्ल एक जानी मानी पत्रकार थी। फिर भी वह भुवन के प्यार में अंधी होकर उसे उसके पहली पत्नी के बच्चों सहित अपनाकर उससे शादी करती हैं। भुवन का असली स्वभाव जैसे ही दिन बितते गए वैसे ही सुजाता को दिखने लगता हैं। फिर उसे एहसास होता हैं कि उसकी पसंद यह नहीं थी। फिर भी वह भुवन को बार-बार समझती है। उसने कैरियर छोड़करर प्रेमविवाह किया था और जो भुवन उसके कैरियर की तारिफ करता था वहीं उसे घर में बिठाता है। सौतेली माँ का बोझ बच्चों की अच्छी देखभाल में ही उसका दिन बितता था।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता घरवालों के विरोध के बावजूद उसका सहपाठी विनय के साथ प्रेमविवाह करती है। सुस्मिता ने प्रतियोगिता परीक्षा पास कर स्थानीय स्टेट बैंक में एक्जिक्यूटिव ऑफिसर की जगह प्राप्त की थी और विनय भी तुरंत लेक्चरशिप कर रहा था। फिर भी विनय के माता-पिता को विनय का प्रेमविवाह घाटे का सौदा लग रहा था। उनका कहना था कि, - ''विनय को उससे ब्याह करके कितना नुकसान हुआ था तथा अन्य जगह शादी करने से कितना तिलक मिल सकता था। ''[2] यह सुनकर विनय भी उनकी तरफ से ही सुशा को तंग करने लगा और इस झगड़े की परिणती दोनों के अलग होने से ही हो जाती है। इसीतरह धन की लालसा के कारण सुशा को प्रेमविवाह एक समस्या बनके सामने आती है । यहाँ प्रेमविवाह की समस्या दर्शीत हैं।

---

1. पद्माशा, बर्फ, पृ. - 13
2. पद्माशा, छोटे शहर की शकुन्तला, पृ. - 67

सानिया जी के 'क्षितिज' की यशोधरा न्यूयार्क पढ़ने जाती है और वहाँ उसकी पहचान केविन नाम के अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के से होती है। वह घर में बिना पुछे ही उसके साथ शादी करके अमेरिका चली जाती है। यशोधरा के घरवाले उसके इस शादी से बहुत नाराज हो जाते है। उसे खत भेजकर वह उनके लिए मर गई ऐसे उसके पिता लिख देते है। जब वह आठ साल बाद उन्हें मिलने आती है तभी भी उसके पिता उससे बात नहीं करते। माता-पिता का क्रोध लेकर ही वह वापस चली जाती है। इस तरह प्रेमविवाह यशोधरा के लिए एक समस्या बन जाती है।जिंदगीभर वह अपने माता-पिता से बिछड़ जाती है। ऐसा चित्रण दिखाई देता हैं।

'एक पाऊल पुढे!' की ऊर्मिला आर्किटेक्ट है। वह विश्वास के फर्म में काम करती है। वही वह उसे शादी के लिए पुछता है और दोनों शादी भी करते हैं। लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारीयों को संभालते-संभालते ऊर्मिला को अपना कैरियर छोड़ना पड़ता है। सारी सुख सुविधाएँ होकर भी ऊर्मिला अकेलेपन की शिकार होती है। प्रेमविवाह के कारण खुद का कैरियर उसे छोड़ना पड़ता हैं। यहाँ प्रेमविवाह की समस्या दिखाई देती है।

'काजवे' की अनू हेमंत के साथ प्रेमविवाह करती है। लेकिन सब सुख सुविधा होकर भी हेमंत अपने मूल्यों को भूल चुका था ऐसे अनू का कहना था। इसी कारण अनू और उसमें अनबन होती है। हेमंत ऑफिस में लोगों से पैसे लिए बगैर कोई भी काम नहीं होने देता था। इसीलिए अनू हेमंत से झगड़ा करती है और फिर मायके चली आती है। अनू के लिए प्रेमविवाह की समस्या दिखाई देती है।

'आकार' की सुचेता के कॉलेज में रवि पढ़ता है। उसी के प्यार में पागल भोलीभाली सुचेता उससे प्रेमविवाह करती है। रवि ऐय्यार्श किस्म का लड़का है। अच्छी नौकरी छोड़कर पैसा कमाने हेतु वह विदेश चला जाता है और यहाँ सुचेता अकेली उसके घरवालों को खुश करती उनके बताए हुए काम करती रहती हैं। झुठे सपनों के सहारे वह रवि एक दिन उसे विदेश ले जाएगा इस आशा में सब सहती रहती है। इसप्रकार यहाँ प्रेमविवाह की समस्या चित्रित होती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा और सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात दोनों की कहानियों में प्रेमविवाह एक समस्या चित्रित दिखाई देती हैं। दोनों की कहानियों में नारी को पति द्वारा शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने हेतु छोड़कर जाने के कारण प्रेमविवाह एक समस्या का सामना करना पड़ता है। दोनों की

कहनियों में नारी को प्रेमविवाह के कारण अकेलेपन से झुँझलाना पड़ता है। दोनों की कहानियों में प्रेमविवाह करनेवाली नारी परिवार में कलह का कारण बनती दिखाई देती है। पद्माशा कहानियों में नारी बच्चों के लिए कैरियर बनाती चित्रित होती हैं। सानिया की कहानियों में नारी को बच्चों के लिए कैरियर छोड़ना पड़ता है। सानिया कि कहानियों में नारी पति के लिए माता-पिता का त्याग करनेवाली दिखाई देती है । पद्माशा की कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं मिलता हैं।

विवेच्य कहानीकारें के काहनियों में प्रेमविवाह एक समस्या को लेकर जो साम्य-वैषम्य परलिक्षित होते हैं, वे इस प्रकार हैं, -

साम्य: :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी जीवन में प्रेमविवाह एक समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
2. दोनों की कहानियों में नारी को पति द्वारा शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने के लिए छोड़कर जाने के कारण ही प्रेमविवाह एक समस्या का सामना करना पड़ता है।
3. दोनों की कहानियों में नारी को प्रेमविवाह के कारण ही अकेलेपन से झुँझना पड़ता है , यह दिखाई देता है।
4. दोनों की कहानियों में प्रेमविवाह करनेवाली नारी परिवार में कलह कारण बनती चित्रित होती है।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियोंकी प्रेमत्रिवाह करनेवाली नारी बच्चों के लिए कैरियर बनाती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी बच्चों के लिए कैरियर छोड़ती चित्रित होती है ।

2. सानिया की कहानियों की नारी पति के लिए अपने माता-पिता का त्याग करती चित्रित होती है ।

- पद्माशा की कहानियों में ऐसा चित्रित नहीं होती है ।

4.4 बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या :

पारिवारिक रिश्तों में जैसे पति-पत्नी के रिश्तें को जितना महत्त्व होता है , उतना ही महत्त्व माता-पिता का बच्चों के प्रति होता हैं। लेकिन अगर पारिवारिक रिश्तों की डोर टूटने लगी तो बच्चों का जीवन अपने आप माता-पिता के झगड़ों में उलझता चला जाता हैं। एक तरफ बच्चे के साथ माँ का रिश्ता ऐसा होता हैं जो पति-पत्नी के तनावपूर्ण संबंधों से मुक्त होने की चाह रखनेवाली स्त्री के पैरों में बेड़ियाँ डालता रहा हैं। या फिर तलाक शुदा पति-पत्नी के तनावों के बीच बच्चें पिसते रहे हैं और माँ उत्पीड़ित बच्चों के जीवन की त्रासदी से व्यथित होती रही हैं। बच्चों के बिखरे जीवन की मूक वेदना से वह क्षणभर के लिए भी मुक्त नहीं हो पाते। पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में भी बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।

पद्माशा की 'बर्फ' कहानी का बाबुल दीपा का बेटा है। दीपा और बाबुल को देवेन शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने हेतु छोड़कर चला जाता है। परिवार को संभालने के लिए आर्थिक स्थिति को संभालना जरुरी होता है , इसीकारण दीपा लेक्चरर की नौकरी करती है, और दो वर्ष का नादान बाबुल को नौकर के हवाले करके चली जाती है। बाबुल को उसके पिता की हरदम याद आती है। वह दीपा से पुछता है कि, - 'मम्मी, बाबा कब आयेंगे? बाबा कहां है?'' इसपर दीपा खुद से कहती है कि, - ''क्या जिंदगी है? हर वक्त नाम लूम इंतजार'' इसपर दो साल का बाबुल, पिता के प्यार के लिए तरसा हुआ कहता हैं कि - ''मम्मी, हम भी नामालूम इंतजाल कलेंगें।''[1] इसपर दो साल के बाबुल द्वारा यह स्पष्ट होता हैं कि, पिता के जिद के आगे बच्चें का जीवन बिखर जाता है। यह चित्रित होता है।

'पीली कली गुलाब की' कहानी का राहुल के पिता विदेश नौकरी के लिए चले जाते है। उसका बड़ा भाई पहले से ही होस्टेल में रहता है। राहुल और उसकी माँ मालिनी विवेक के विदेश जाने के बाद मालिनी के जेठ-जेठानी के साथ रहने लगे। लेकिन राहुल पापा का बहुत लाड़ला बेटा है इसीकारण वह उनसे अलग रहने के लिए तैयार नहीं है। ''राहुल अन्य बच्चों के बीच अकेला पड़ने लगा और घंटों अकेले चुपचाप छत पर खेलता रहता।''[2] राहुल की पसंदीता चिजे जेठ के बच्चे खा लेते। पापा के जाने के बाद राहुल एकदम अकेला पड़ता है। यहाँ राहुल द्वारा बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या चित्रित होती हैं।

---

1. डॉ. पद्माशा झा, बर्फ, पृ. - 11
2. डॉ. पद्माशा झा, पीली कली गुलाब की, पृ. - 38

'गर्म बिस्तर' की मुनिया माता - पिता के झगडें में पिता के पास रहती है और माँ के बिना उसका जीवन बिखर जाता है। उसकी माँ नीमा पति परेश के मार पीट से और उसने दुसरी औरत रख ली थी इस कारण परेश से झगड़ा करती है।लेकिन वही उसे घर से बाहर निकालता है और नीमा उस हालात में घर छोड़ देती हैं। उसे बेटी का खयाल ही नहीं रहता और बेटी मुनिया पिता के पास ही रह जाती है। एक तो पिता ने दुसरी औरत रखली थी और माँ भी उसके साथ नहीं थी।इस तरह का मुनिया का बिखरा जीवन यहाँ चित्रित होता है।

सानिया की कहानी की 'परिणाम' की रितू का जर्न्यालिझम हो गया था। अभी वह बढ़ी थी, लेकिन बचपन से वह अपनी माता के प्रति पिता का क्रोध तथा तिरस्कार देखती जा रही थी। क्योंकि उसकी ही निशानी रितू थी यह उसके पति सुखदेव को शक था। इसीकारण घर में बहुत कलह मच जाता था। लेकिन रितू के पिता सुखदेव रितू से बहुत प्यार करते थे। रितू इस बारे में कैलास से बात करती है तब कहती है कि - ''माझ्या नंतरच्या दोन्ही भावंडांचे तितके खास लाड केले नाहीत. मी मात्र कुणी स्पेशल होते. त्यामुळे संताप आला भयंकर तो याचा की, का म्हणून ममानं असं करावं ?ते ही तुमच्या सारख्यांसाठी ?''[1] रितू का जीवन एकदम बिखर गया था। माता पिता की साशंक भरी जिंदगी कें कारण रितू का जीवन बिखरा हुआ चित्रित होता है।

'चित्र' कहानी की शशी को बेटा गौतम और बेटी आरती दो बच्चे है शशी एक कर्तबगार नारी है। कारोबार को संभालते संभालते परिवार पर बच्चों पर वह ध्यान ही दे नहीं पाती और पति विनोद पत्नी को निचा दिखाने हेतु दूसरी औरत को लेके रहता हैं। उसका बेटा गौतम इंजिनिअरींग में पढ़ता है। लेकिन वह बार - बार फेल होता है। गाडी, दोस्त और सिनेमा देखने से उसे फुरसत नहीं है। बेटी आरती बी.ए. कर चुकी है और शादी करना चाहती है। जो लड़का रईस हो, दिखने में सुंदर हो और उसे लेके अमेरिका जा सके ऐसे ही लड़के से वह शादी करना चाहती है। माता पिता का बच्चों पर ध्यान ना होने के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह गौतम और आरती के खयालातों को देखकर बच्चों के बिखरे जीवन की समस्याँ यहाँ दृष्टिगोचर होती हैं।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं। दोनो की कहानियों में माता - पिता के कलह के कारण बच्चों का

---

1. सानिया, परिणाम, पृ. -15

जीवन बिखर जाता हैं यह चित्रण द्रष्टव्य होता है।

दोनों की कहानियों में पिता ने दुसरी औरत को लेके नया परिवार बनाने के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं यह दिखाई देता है।

पद्माशा की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता हैं। सानिया के कहानियों में बच्चो के बिखरे जीवन की समस्या अत्यल्प मात्रा में दिखाई देती हैं। पद्माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों को बिखरे जीवन की समस्या का साम्ना करना पड़ता हैं। सानिया की कहानियों में माँ के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों बिखरे जीवन का सामना करना पड़ता हैं।

विवेच्य कहानीकारों के कहान्यिों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या को लेकर जो साम्य - वैषम्य सामने आते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात दोनों की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं।
2. दोनों की कहानियों में माता - पिता के कलह के कारण बच्चों को बिखरे जीवन की समस्या का सामना करना पड़ता हैं।
3. दोनों की कहानियों में पिता द्वारा दुसरी औरत के साथ नया परिवार बनाने के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं यह दिखाई देता है।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है।
- सानिया की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या अत्यल्प मात्रा में चित्रित होती हैं।
2. पद्माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधो के कारण बच्चों का जीवन बिखरता हैं, यह चित्रण द्रष्टव्य होता है।
- सानिया की कहानियों में माता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह चित्रण दिखाई देता है।

4.5 स्त्री - पुरुष अनैतिक संबंध की समस्या :

आज के युग में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण सामाजिक बंधन बहुत कम दिखाई देते हैं। स्त्री - पुरुष समानता, स्त्री का हर क्षेत्र में पुरुष के बराबर काम करना यह आम बात हैं। इस कारण स्त्रियाँ आत्मनिर्भर बन गयी हैं, अनेक स्त्रियाँ नौकरी के कारण परिवार की चार दीवारी में से बाहर रहने लगी इस कारण अनेक पर पुरुष के साथ संबंध आता जाता हैं। शहरों में स्त्री - पुरुषों में पाप - बोध, अनैतिकता की धारणा में काफी मात्रा में परिवर्तन हो चुका हैं। इसी संदर्भ में गोपाल कृष्ण कौल ने लिखा है - ''जीवन की सहजता स्वयं एक मूल्य हैं। हमारी सभ्यता ने हमारे ऊपर इतने कुत्रिम आवरण डाल रखे हैं कि हम मनुष्य की तरह पाप पुण्य दोनों बहुत बनावटी हो गये हैं।''[1]

कभी कभी मजबुरी के कारण स्त्री अपने पति से अलग होकर किसी पर पुरुष के साथ अनैतिक संबंध रखती है और पुरुष भी अपनी पत्नी के साथ संबंध होकर भी दोनों अलग होने के बाद किसी पर स्त्री के साथ अनैतिक संबंधों का चित्रण पद्माशा तथा सानिया के कहानियों में द्रष्टव्य होता हैं।

पद्माशा की 'बर्फ' कहानी की दीपा और देवेन ने प्रेमविवाह किया है । लेकिन देवेन शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाना चाहता है इसी कारण वह बार - बार दीपा को अकेला छोड़कर चला जाता हैं। इसी दौरान दीपा की कुणाल के साथ दोस्ती होती है और वह बहुत गहरी बन जाती है। जब देवेन आता है तो बार - बार कुणाल का फोन आते देख दीपा से इसका कारण पुछता है।तो दीपा कहती है कि, - ''साफ - साफ ही समझ लो''[2] इस बात पर देवेन खुद शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने हेतु दीपा को अकेला छोड़कर चला गया था और उसे समाज ऐसे रिश्तों को इजाजत नहीं देगा ऐसे कहकर दीपा के कुणाल के साथ बने संबंध उसे समस्या लगने लगती है। यहाँ दीपा और कुणाल के संबंधो द्वारा स्त्री - पुरुष के अनैतिक संबंधों की समस्या का चित्रण दिखाई देता है।

'चांद पीला क्यों हैं?'' की मोहिनी की शादी जी. जे. नाम के आदमी से होती है। जी. जे का डॉ. शालीनी नाम के औरत के साथ अनैतिक संबंध बनते है। फिर भी जी. जे ने मोहिनी सांवली होकर भी पढ़ी लिखी है और वह उसका आर्थिक स्तर बढ़ा सकती है इसी कारण शादी करता है। इसलिए मोहिनी जी. जे. और शालिनी के संबंध होने के कारण अनैतिक संबंधो की समस्या से झुरती है ।

---

1. सं.श्री. सुरेंद्र, नई कहानी दशा दिशा सम्भावना, पृ. -345

2. पद्माशा, बर्फ, पृ. - 12

'गर्म बिस्तर' की नीमा का पति परेश एक शराबी आदमी है। वह उसे हमेशा शराब पीकर मारता पीटता है । फिर भी बच्चों को देखकर नीमा चुप रह जाती है । लेकिन परेश जिस कारखाने में काम करता है वहाँ पूनोबाई नाम की औरत काम करती है। उसे वह एक दिन घर ले आता है और वह यही रहेगी ऐसे नीमा को कहता हैं। लेकिन नीमा इसका बहुत झगड़ा करके विरोध करती है। परेश नहीं मानता और उसे ही घरसें बाहर निकाल देता है। परेश और पूनोबाई के अनैतिक संबंधों के कारण नीमा के सामने समस्याँ खड़ी रहती दिखाई देती है।

सानिया की 'परिमाण' कहानी की देवकी कैलास से बचपन से ही प्यार करती थी मगर कैलास को बता नहीं पाती। बाद में देवकी की शादी हो जाती है और फिर कैलास और देवकी मिलते हैं। देवकी और कैलास के अनैतिक संबंध है, ऐसा उसका पति सुखदेव को शक था और उसकी बेटी रितू यह भी कैलास की बेटी है ऐसे उसे लगता था। इसके कारण सुखदेव और देवकी में हमेशा झगड़े होते थे। देवकी के अनेक लोगों के साथ संबंध है यह सुखदेव जानता था। इसी कारण वह उससे अलग रहने लगता है। सुखदेव के साथ देवकी के अनैतिक संबंध एक समस्या बनके खड़ी रहती है, ऐसा चित्रित होता है।

'चित्र' कहानी की शशी एक कर्तबगार नारी थी।वह एस्बी नामक आदमी के यहाँ सेक्रेटरी थी। उसका काम करने का तरीका और लगन देखकर एस्बी ने उसे अपनी बहू बनाया । बाद में वह ही एस्बी का सारा कारोबार संभालने लगी। लेकिन एस्बी और शशी का पति विनोंद में कभी बनती नहीं थी। इसी लिए वह भी अलग कारोबार डालता है। लेकिन वह शशी के आगे ना कामयाब होता है। तो उसे निचा दिखाने के लिए वह एक औरत को लेकर अलग रहने लगता हैं और उसे कहता है, की, - ''बघ, मिळवते आहेस ना तू तुला हवं ते ? - एकटीनं, स्वतंत्र? खुशाल मिळव जा पुढे, तुझ्या मुक्तीच्या मार्गानं, पण नवरा म्हणून मी तुला अजूनही काही एक नाकारु शकतो आणि ते दुसऱ्या स्त्रीला बहाल करु शकतो. पहायचा आहे तो माझा पुरुषार्थ?''[1] इस तरह एक स्त्री कितनी भी कर्तुत्त्ववान हो फिर भी उसे पति के आगे झुकना ही चाहिए यह मानसिकता पुरुषों की होती हैं। इसतरह शशी के सामने अनैतिक संबंधों की समस्या चित्रित होती है।

1. सानिया, चित्र, पृ. - 118

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्त्री - पुरुष अनैतिक संबंधों की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं। दोनों की कहानियों में पति द्वारा अनैतिक संबंध रखने के कारण पत्नी को इस समस्या का सामना करना पड़ता है। दोनों की कहानियों में स्त्री - पुरुष अनैतिक संबंधों के कारण वैवाहिक अस्थिरता चित्रित होती हैं। दोनो की कहानियों में अनैतिक संबंधों के कारण उनके बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह द्रष्टव्य होता हैं।

विवेच्य कहानिकारों के कहानियों में स्त्री - पुरुष अनैतिक संबंधों के चित्रण को लेकर जो भी साम्य - वैषम्य परिलक्षित होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में स्त्री - पुरुष अनैतिक संबंध की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं।
2. दोनों की कहानियों में पति द्वारा अनैतिक संबंध रखने के कारण पत्नी को इस सनस्या का सामना करना पड़ता दिखाई देना है।
3. दोनों की कहानियों में स्त्री - पुरष अनैतिक संबंध की समस्या के कारण वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण दिखाई देता है ।
4. दोनों की कहानियों में माता एवं पिता द्वारा अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता है ऐसा चित्रित होता हैं।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में नारी पति के दुर्व्यवहार के कारण अनैतिक संबंध रखती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों में नारी स्वच्छंदी जीवन जीने की लालसा हेतु अनैतिक संबंध रखती चित्रित होती है ।

2. पद्माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधो के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता है।

- सानिया की कहानियों में माता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं।

4.6 अनमेल विवाह की समस्या :

भारतीय समाज में अनमेल विवाह भयंकर सामाजिक दोष है। अनमेल विवाह के अनेक कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण है आर्थिक संकट। जब माँ - बाप अपनी आजीविका में से हजारों रुपएँ दहेज में देने के लिए असमर्थ होते हैं, तो वह विवश होकर किसी ऐसे व्यक्ति से अपनी लड़की का विवाह करने के लिए तैयार हो जाते है, जो धन न माँगें। अनमेल विवाह तब भी होता है, जब की विवाह संबंध स्थापित करनेवाले माँ-बाप न हो। या फिर लड़की दिखने में सुंदर ना हो।

अनमेल विवाह की समस्या सामंतवादी और पूँजीवादी समाज व्यवस्था का एक मात्र महत्वपूर्ण दोष है, जिसमें पुरुष नारी को अपनी वैयक्तिक संपत्ति मात्र समझाता है। ''भारत में अनमेल विवाह की समस्या के विशेष गहन बनने का कारण यह भी था कि नारी की ओर उपेक्षा और घृणा की दृष्टि से देखने में अनेक धार्मिक संप्रदायों ने भी योग दिया।''[1]

पद्‌माशा तथा सानिया के कहानियों में भी अनमेल विवाह का चित्रण मिलता है। पद्‌माशा की 'चांद पीला क्यों है?' की मोहिनी दिखनें में सांवली थी। उसका रंग सांवला होने के कारण उसकी शादो कहीं भी तय नहीं हो पा रही थी। इसके लिए उसके घरवाले तंग आ चुके थे। लेकिन जी. जे नाम का आदमी दिखने में सुंदर होने के बावजुद भी मोहिनी के साथ सिर्फ इसलिए शादी करता है कि वह पढ़ी लिखी है और वह अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए कमाऊ बीवी चाहता था। लेकिन उनकी जाती में दिखने में सुंदर और पढ़ी लिखी कोई कुँआरी लड़की मिलती नहीं इसी कारण वह दिखने में सांवली होने के बावजुद भी उनके साथ विवाह करता है। यहाँ अनमोल विवाह की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है।

सानिया की 'काजवे' कहानी की लीला एक सीधी - सादी बी.ए. पास लड़की है। लेकिन माता - पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण उसे पूछे बिना उसका विवाह राघव के साध किया जाता है। भोली भाली लीला और खुद में ही रहने वाला विक्षिप्त स्वभाव का राघव इन दोनों के विवाह में अनमेल दिखाई देता हैं। यहाँ अनमेल विवाह की समस्या दृष्टिगोचर होती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। दोनों की कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या का सामना नारी को ही

---

1. चंद्रकांत म. बांदिवडेकर, हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. -193

करना पड़ता है।समाज में जब माता - पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी ना हो तो बेटीयों को हमेशा माता - पिता जहाँ भी शादी करके भेज दे वही रहना पड़ता हैं। या फिर लड़की दिखने में कुरुप हो तो माता - पिता के लिए वह एक समस्या वनती है। उस से अगर कोई सुंदर लड़का शादी करना चाहता है तो लड़की के माता - पिता उसे मुँह नांगा दहेज दे देते है। इसी का चित्रण यहाँ दिखाई देता है। पद्‌माशा की कहानियों में नारी दिखने मे कुरुप होने के कारण अनमेल विवाह की समस्या का सामना करती दिखाई देती हैं। सानिया की कहानियों की नारी को माता - पिता की आर्थिक स्थिती अच्छी ना होने के कारण उसे अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता है ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या को लेकर जो साम्य - वैषम्य सामने आते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात दोनों की कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण दृष्टिगोचर होता है।
2. दोनों की कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या का सामना सिर्फ नारी को ही करना पड़ता है, यह चित्रित दिखाई देता है

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों में नारी को कुरुपता की वजह से अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता है , यह चित्रित होता है।

- सानिया की कहानियों में नारी को पति-पत्नी के आयु में कई वर्षो का अंतर हो जाने के कारण अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता है, यह चित्रित है।

4.7 यौन समस्या :

स्त्री-पुरुष संबंध में यौन संबंधों को महत्त्व दिया जाता हैं। लेकिन विवाह के बिना स्थापित यौन-संबंध हमारे यहाँ अनैतिक तथा असामाजिक माने जाते हैं। परंतु स्वतंत्रता के बाद काम-संबंधी जो संयत और गोपनीय दृष्टि थी वह आधुनिक संदर्भो में टूटती जा रही हैं। फल स्वरुप वह अनेक समस्याओं को आमंत्रित कर रही हैं। इस बारें में डा. रमेश देशमुख का मत विचारणीय है -

"भारतीय परिवेश में काम को गुप्त माना गया है और विवाहेत्तर काम-संबंधो को दुश्चरित्रता का पर्याय माना गया हैं।"[1]

इसी कारण यौन संबंधो की मर्यादा के लिए विवाह संस्था का निर्माण समाज में हुआ है। लेकिन बदलती परिस्थिति में विवाह संस्था का महत्त्व कम हो गया। आज प्रेम और यौन को अलग देखा गया हैं, इसी कारण आत्मिक प्रेम के विकृत रुप को यौन-संबंध कहा जाने लगा। अत: मनुष्य की अतृप्त वासना का शमन करने के लिए स्त्री-पुरुषों के बीच ऐसे यौन-संबंध बनते हैं। इन संबंधों को समाज से छिपाकर स्त्री-पुरुष अपने शरीर की प्यास बुझाते हैं। इसका चित्रण सानिया की कहानियों में मिलता है।

सानिया की 'परिमाण' की देवकी कैलास से प्यार करती है । लेकिन उसकी शादी सुखदेव से होती है। शादी के बाद देवकी को कैलास के साथ यौन-संबंध आते है और यही सुखदेव के लिए बड़ी समस्या बनती है। उसे शक है उसकी बेटी रितु यह कैलास की ही बेटी है। देवकी के सिर्फ कैलास के साथ ही यौन-संबंध थे ऐसे नहीं तो और भी लोगों से संबंध थे। क्योंकि वही एक बार कैलास को कहती है कि, "आता मुलं मोठी होत झाली, वाटतं की, ही आतली तहान शरीराची, मनाची संपून जायला हवी. म्हणजे थोडी शांती मिळेल; पण सवयच झाली आहे. कामाची व्हावी तशीच. अनेक ठिकाणी लक्ष जातं."[2] इससे साबित होता है कि, यौन अतृप्ति के कारण देवकी के अनेक के साथ यौन-संबंध थे। इस समस्या से यह बाहर निकलना चाहती है, लेकिन निकल नहीं पाती। इस तरह देवकी के इस समस्या के कारण सुखदेव के परिवार को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है ऐसा चित्रण मिलता है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों के अध्ययन के बाद यह दिखाई देता हैं कि सानिया की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण मिलता है। तथा पद्‌माशा की कहानियों में इसका चित्रण नहीं मिलता। सानिया की कहानियों में नारी शादी के बाद विवाहेत्तर यौन संबंध रखती है। यौन अतृप्ति के कारण वह अनेक लोगों के साथ संबंध रखती चित्रित होती है। इस कारण इस समस्या का सामना उसके पति को करना पड़ता है।

---

1. डॉ. रमेश देशमुख, आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवनमूल्य, पृ. -74

2. सानिया, परिमाण, पृ. -17

विवेच्य कहानीकारों के अध्ययन के पश्चात यौन समस्या को लेकर जों साम्य-वैषम्य परिलक्षित होता हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में यौन समस्या को लेकर कोई साम्य परिलक्षित नहीं होता।

वैषम्य :

1. सानिया की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण चित्रित है।
- पद्‌माशा की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण ही चित्रित नहीं है ।

4.8 दहेज समस्या :

भारतीय समाज में दहेजप्रथा की समस्या वधू-पक्ष से ही संबंधित है। दहेज की राशी का निर्धारण वर की कुलीनता, शिक्षा और व्यवसाय के आधारपर किया जाता हैं। वधू पिता चाहता है कि अपनी बेटी उच्च तथा धनवान परिवार में ही व्याही जाए। एक ही जाति में योग्य वर का दुर्लक्ष होना, अनुलोम विवाह, सामाजिक स्तर, लेन-देन का दुष्चक्र, सामाजिक प्रथा आदि कारणों से दहेज प्रथा को बढ़ौती मिलती हैं। दहेज के कारण अनमेल विवाह, बालविवाह, व्यापारीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता हैं, परिवार विघटित होते हैं, वहुओं पर अत्याचार और उनकी हत्याएँ भी होती हैं। डॉ. शील प्रभा वर्मा दहेज को वर मूल्य प्रथा कहती हैं। उनके अनुसार - ''वर मूल्यप्रथा से अनेक कहानियाँ हैं। वर मूल्य के कारण शिशु हत्या, आत्महत्या, क्षणग्रस्तता, बेमेल विवाह, कन्याओं का दुख:द वैवाहिक जीवन, दो परिवारों में तनाव आदि हो जाते हैं।''[1]

दहेज प्रथा पर समाज जागृति से हो समाधान प्राप्त किया जा सकता है। पद्‌माशा की कहानियों में भी दहेज समस्या का चित्रण दिखाई देता है। उनकी 'अनुपमा' कहानी की अनुपमा एम्. एस. सी. फायनल में पढ़ रही सुशील और मेधावी लड़की है। जो स्वभाव से किंचित संकोची और मितभाषिणी है। उसके माता-पिता दोनों भी अच्छे पद पर काम कर रहे हैं। फिर भी बेटी की शादी की फिक्र किसे नहीं है। वैसे ही उसकी माता-पिता ने संजय का रिश्ता अच्छा समझकर उसका ब्याह

---

1. डॉ. शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते संदर्भ, पृ. - 57

बड़ी धूमधाम से करवा दिया। "जितना उन्होंने चाहा उतना नकद दिया, सामानों की जो सूची उधर से आई उसमें कुछ ज्यादा जोड़ कर दहेज भिजवाया, महंगे जेवरातों के आलावा टी.वी., फ्रिज, बी. सी. आर., कुकिंग रेंज, क्राकरी, फर्नीचर यहाँ तक कि रुम कूलर तक दिया।"[2] फिर भी अनुपमा के ससुरालवालों की मांगे बढ़ती ही गयी। इसका अनुपमा पर बहुत असर पड़ने लगा। एक तो पति नौकरी के बाहर रहता हैं और घर में सास ससुर और बड़ी ननद उसे बार-बार किसी ना किसी बात पर टोकते हैं। बार-बार तकलीफ देते है। एक दिन अनुपमा को चाय बनाने के लिए कहकर उसें बड़ी ननद रेवा और सास-ससुर ने मिलकर है। मिट्टी का तेल डालकर उसे जला डाला। अनुपमा कुछ समझने से पहले ही चल बसी थी और बाद में सब कुछ निपटाकर उसकी मौत 'एक हादसे से हुई मौत' ऐसे पुलिस के रिपोर्ट में लिख दी जाती हैं।

इस तरह पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण हुआ हैं।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अनुशीलन के बाद यह द्रष्टव्य होता है कि पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रग मिलता है। तो सानिया की कहानियों में इसका चित्रण ही नहीं मिलता है।

पद्माशा की कहानी में अनुपमा द्वारा समाज में लालच के कारण आदमी इन्सानियत भुल जाता हैं और बेकसूर बच्चियों के जान के दुश्मन बन जाते हैं।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों के अध्ययन के पश्चात दहेज समस्या को लेकर जो साम्य-वैषम्य मिलते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या के चित्रण को लेकर कोई साम्य परिलक्षित नहीं होता।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण मिलता है।

- सानिया की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण ही नहीं मिलता।

---

1. पद्माशा झा, अनुपमा, पृ. -7

4.9 जमींदारों के शोषण की समस्या :

श्री. वृंदावनलाल वर्मा ने 'अमरबेल' में लिखा हैं कि, - "अधिकांश जमींदारों का इतिहास जबर्दस्ती लुटमार और साहुकारी दाँव-पेचों से बना हैं।"[1] सदियोंसे यह परंपरा चलती आ रही है की, उच्चवर्ग के लोगों द्वारा निम्न वर्ग के लोगों का शोषण होता हैं। इसमें ज्यादातर जमींदारों द्वारा ही निम्न वर्ग के लोगों का बहुत शोषण होता हैं। काम-काज करनेवाले मजदूर, कामकाज तो करते हैं लेकिन उसका मुनाफा वह कभी नहीं ले पाते और ना ही जमीनदारों के खिलाफ कुछ बोल पाते हैं। यही बात पद्माशा जीने अपनी कहानियों द्वारा चित्रित की हैं। उनकी 'रोज-रोज' की सुरजी मालिक के खेतों में बचपन से काम करती आयी थी। फिर भी मालिक ने कभी उस पर दया नहीं दिखाई थी। सुरजी के मर्द ने मालिक से तीसरे साल बंटाई पर गेहू का खेत लिया था। "हर साल वह कितनी लगन से बीज डोभती हैं, कैरोनी करती हैं पोखर में लगाकर करीन से सींचती है ...... मगर उसके घर की कोठी तक अनाज कभी न पहुंचा, खलिहान से ही अनाज रातों-रात न जाने कहाँ बिला जाता हैं। कभी-कभी तो सुरजी को लगता है वह मादा कौवा की तरह कोयल के बच्चे को अपना बच्चा समझकर पालतीं है । अंखफोड होते ही कोयल का बच्चा भाग जाता है और वह सूने घोंसले की तरफ ताकती रह जाती है।"[2] सुरजी बहुत उदास हो जाती है, कि अपने बच्चों की तरह खेतों को संभालकर भी वह उसके बच्चों को एक वक्त की रोटी तक खिला नहीं पाती। उसका दूध पीता बच्चा जब मिट्ठी के गोले पेठ भरने के लिए खाता है, तो उसे देखकर भी सुरजी उसे मना नहीं कर सकती थी क्योंकि वह खुद भुखी रह सकती थी लेकिन बच्चों को भुखा देख वह सह नहीं पाती। जमीदारों द्वारा किए गए शोषण की समस्या से वह त्रस्त दिखाई देती है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया के कहानियों के अध्ययन के बाद यह द्रष्टव्य होता है कि, पद्माशा के कहानियों में जमीदारों के शोषण की समस्या दिखाई देती है। तथा सानिया की कहानियों में जमीदारों के शोषण की समस्या ही चित्रित नहीं है। पद्माशा की कहानियों की नारी मालिक के खेतों को अपने बच्चें की तरह संभालती है, लेकिन जब अनाज आता है तब वह अपने आप मालिक के घर में पहुँच

1. वृंदावनलाल वर्मा -अमरवेल, पृ. -215
2. डॉ. पद्माशा, रोज-रोज, पृ. -33

जाता है । काम कर-कर भी वह अपने बच्चों को एक वक्त का खाना नहीं खिला पाती हैं, ऐसा चित्रण दिखाई देता है ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में जमीदारों के शोषण की समस्या को लकर जो साम्य-वैषम्य दृष्टिगोचर होते हैं - वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया के कहानियों में जमीदारों के शोषण की समस्या को लेकर कोई साम्य नहीं मिलता।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में जमींदारों के शोषण की समस्या का चित्रण मिलता है ।
- सानिया की कहानियों में इसका चित्रण ही नहीं मिलता।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

डा. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में प्रस्तुत विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्या के अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष रुप में जो तथ्य सामने आये हैं, वे इस प्रकार हैं -

पद्माशा तथा सानिया की कहान्यिों के अध्ययन के पश्चात नारी जीवन में विवाह विच्छेद समस्या दृष्टिगोचर होती है। दोनों की कहानियों में नारी ही विवाह-विच्छेद समस्या का सामना करती दिखाई देती है। दोनों की कहानियों में नारी को विवाह-विच्छेद के कारण अकेलेपन जैसी समस्या का साम्ना करना पड़ता दिखाई देता है। दोनों की कहानियों में नारी स्वावलंबी दिखाई देती है। पद्माशा की कहानियों में नारी विवाह-विच्छेद के बाद किसी का सहारा लेती दिखाई देती है। सानिया की कहानियों में ऐसे नहीं दिखाई देता।

दोनों की कहानियों में अकेलेप्न की समस्या का चित्रण मिलता हैं। दोनों की कहानियों में स्वावलंबी नारी और परावलंबी नारी दोनों भी अकेलेपन की समस्या से झुँझती दिखाई देती हैं। दोनों की कहानियों में अपनापन ना मिलने के कारण नारी अकेलेपन की शिकार होती चित्रित हुई है। कहानियों में नारियाँ पति के विक्षिप्त स्वभाव के कारण अकेलापन सहती दिखाई देती हैं। दोनों की कहानियों में नारी बच्चों की सुविधा के कारण अकेलापन सहती दिखाई देती है। पद्माशा की कहानियों की नारी बच्चों के साथ नहीं रह सकती इसीलिए अकेलेपन की समस्या का सामना करती

हैं। सानिया की कहानियों की नारी बच्चें उसके साथ नहीं रहना चाहते इसीलिए अकेलेपन की समस्या का सामना करती दिखाई देती हैं।

दोनों की कहानियों में प्रेमविवाह एक समस्या चित्रित होती है। दोनों की कहानियों में नारी को पति द्वारा शादी जैसे बंधन से मुक्तिपाने हेतु छोड़कर जाने के कारण प्रेमविवाह एक समस्या का सामना करना पड़ता है। दोनों की कहानियों में नारी को प्रेमविवाह के कारण अकेलेपन से झुँझलाती दिखती है । दोनों की कहानियों में प्रेमविवाह करनेवाली नारी परिवार में कलह का कारण बनती चित्रित होती है। पद्‌माशा की कहानियों में नारी प्रेमविवाह की समस्या के कारण बच्चों के लिए अपना कैरियर बनाना पड़ता हैं तथा सानिया की कहानियों में नारी को कैरियर बच्चों की देखभाल के कारण छोड़ना पड़ता हैं, ऐसा चित्रण मिलता हैं।

दोनों की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं। दोनों की कहानियों में माता-पिता के कलह के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह चित्रण द्रष्टव्य होता है। दोनों की कहानियों में पिता ने दुसरी औरत को लेके नया परिवार बनाने के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह दिखाई देता है।

पद्‌माशा की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती हैं। सानिया के कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन कि समस्या अत्यल्प मात्रा में दिखाई देती हैं। पद्‌माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों को बिखरे जीवन की समस्या का सामना करना पड़ता हैं। सानिया की कहानियों में माँ के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों को बिखरे जीवन का सामना करना पड़ता हैं।

दोनों की कहानियों अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। दोनों की कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या का सामना नारी को ही करना पड़ता है। समाज में जब माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी ना हो तो बेटियों को हमेशा माता-पिता जहाँ भी शादी करके भेज दे वही रहना पड़ता हैं। या फिर लड़की दिखने में कुरुप हो तो माता-पिता के लिए वह एक समस्या बनती है। उससे अगर कोई सुंदर लड़का शादी करना चाहता है तो लड़की के माता-पिता उसे मुँह माँगा दहेज दे देते है। इसी का चित्रण यहाँ दिखाई देता है । पद्‌माशा की कहानियों में नारी दिखने में कुरुप होने के कारण अनमेल विवाह की समस्या का सामना करती दिखाई देती है । सानिया की कहानियों की नारी को माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण उसे अनमेल विवाह

की समस्या का सामना करना पड़ता है ।

सानिया ती कहानियों में यौन समस्या का चित्रण मिलता है तथा पद्माशा की कहानियों में यौन संबंध का चित्रण नहीं मिलता। सानिया के कहानियों में नारी शादी के बाद विवाहेत्तर यौन संबंध, यौन अतृप्ति के कारण अनेक लोगों के साथ रखती है ऐसे चित्रित हुआ है। इसी कारण यौन समस्या का सामना उसके पति को करना पड़ता है।

पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण मिलता है तथा सानिया की कहानियों में इसका चित्रण नहीं मिलता है। पद्माशा की कहानियों में जमीदारों के शोषण की समस्या दिखाई देती है तथा सानिया की कहानियों में इसका चित्रण नहीं मिलता। पद्माशा की कहानियों की नारी मालिक के खेतों को अपने बच्चें की तरह संभालती है लेकिन जब अनाज आता हैं तब वह अपने आप मालिक के घर में पहुँच जाता है । काम करकर भी वह अपने बच्चों को एक वक्त का खाना नहीं खिला पाती हैं, ऐसा चित्रण मिलता है।

विवेच्या कहानीकारों के कहानियों में प्रस्तुत विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्या के अध्ययन के पश्चात जों साम्य-वैषम्य दृष्टिगोचर होते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में विवाह-विच्छेद समस्या दृष्टिगोचर होती है।
2. दोनों की कहानियों में विवाह विच्छेद समस्या के कारण नारी को अकेलेपन का शिकार होना पड़ता है।
3. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के अकेलेपन की समस्या का चित्रण दिखाई देता है।
4. दोनों की कहानियों में स्वावलंबी और परावलंबी दोनों भी नारियाँ अकेलेपन की समस्याँ से झुँझलाती दिखाई देती है।
5. दोनों की कहानियों में अपनापन ना मिलने के कारण अकेलापन सहनेवाली नारी चित्रित हुई है।
6. दोनों की कहानियों की नारियाँ पति के विक्षिप्त स्वभाव के कारण अकेलेपन की समस्या की शिकार होती परिलक्षित होती है।

7. पद्‌माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में नारी जीवन में प्रेमविवाह एक समस्या का चित्रण द्रष्टव्य हाता है।
8. दोनों की कहानियों में नारी को पति द्‌वारा शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने के लिए छोड़कर जाने के कारण ही प्रेमविवाह एक समस्या का सामना करना पड़ता है।
9. दोनों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात दोनों कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
10. दोनों की कहानियों में स्त्री-पुरुष अनैतिक संबंध की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
11. दोनों की कहानियों में पतिद्‌वारा अनैतिक संबंध रखने के कारण पत्नी को इस समस्या का सामना करना पड़ता दिखाई देता है।
12. दोनों की कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण दृष्टिगोचर होता है।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा के कहानियों की नारी विवाह-विच्छेद के बाद किसी आदमी का सहारा लेती दिखाई देती है।
- सानिया के कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं दिखाई देता।
2. पद्‌माशा की कहानियों की नारी बच्चों के साथ नहीं रह सकती हैं इसीलिए अकेलापन सहती चित्रित होती है।
- सानिया की कहानियों की नारी बच्चे साथ नहीं रहते इसीलिए अकेलापन सहती दिखाई देती हैं।
3. पद्‌माशा की कहानियों की प्रेमविवाह करनेवाली नारी इस समस्या के कारण बच्चों को संभालने के लिए अपना कैरियर बनाती चित्रित होती हैं।
- सानिया की कहानियों की नारी बच्चों के लिए कैरियर छोड़ती चित्रित होती हैं।
4. सानिया की कहानियों की नारी पति के लिए अपने माता-पिता का त्याग करती चित्रित होती हैं।
- ऐसा चित्रण पद्‌माशा की कहानियों में नहीं मिलता।

5. पद्माशा की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती हैं।

- सानिया की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या अत्यल्प मात्रा में चित्रित होती हैं।

6. पद्माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह चित्रण मिलता हैं।

- सानिया ती कहानियों में माता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह चित्रण दिखाई देता हैं।

7. पद्माशा की कहानियों में नारी पति के दुर्व्यवहार के कारण अनैतिक संबंध रखती चित्रित होती हैं।

- सानिया की कहानियों में नारी स्वच्छंदी जीवन जीने की लालसा हेतु अनैतिक संबंध रखती चित्रित होती हैं।

8. पद्माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं।

- सानिया की कहानियों में माता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं।

9. पद्माशा की कहानियों में नारी को कुरुपता की वजह से अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता है यह चित्रित होता हैं।

- सानिया की कहानियों में नारी को पति-पत्नी के आयु में कई वर्षो का अंतर हो जाने कारण अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता हैं, यह चित्रित होता हैं।

10 सानिया की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण हुआ हैं।

- पद्माशा की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण नहीं मिलता हैं।

11 पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण मिलता हैं।

- सानिया की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण ही नहीं मिलता।

12 पद्माशा की कहानियों में जमिंदारों के शोषण की समस्या का चित्रण मिलता हैं।

- सानिया की कहानियों में इसका चित्रण मिलता नहीं है ।

****